Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 11, pp 01-06, November, 2026

नगरी विकासखण्ड में लघु वनोपज के माध्यम से आदिवासी समुदाय का आर्थिक सशक्तिकरण: 50 परिवारों के सर्वेक्षण पर आधारित एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

लेखिका: डॉ. दीपा देवांगन

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग



सार (इेजतंबज) रू

भारत के जनजातीय समुदायों की आजीविका में लघु वनोपज का विशेष महत्व है। विशेषतः छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में तेंदूपत्ता, महुआ, सालबीज, हर्रा, इमली एवं अन्य लघु वनोपज न केवल पारंपरिक आजीविका के साधन हैं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सुदृढ़ बनाने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य नगरी विकासखण्ड के जनजातीय परिवारों के आर्थिक सशक्तिकरण मे लघु वनोपज की भूमिका का विश्लेषण करना तथा शासकीय योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना है। अध्ययन के लिए 50 जनजातीय परिवारों का चयन कर प्रश्नावली के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ संकलित किए गए। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश परिवार कृषि एवं लघु वनोपज संग्रह पर निर्भर हैं किन्तु उचित बाजार मूल्य, प्रसंस्करण सुविधाओं, प्रशिक्षण तथा विपणन व्यवस्था की कमी आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। यदि लघु वनोपज आधारित मूल्य संवर्धन, प्रशिक्षण तथा प्रभावी विपणन व्यवस्था विकसित की जाए, ता जनजातीय समुदाय के आर्थिक सशक्तिकरण को नइ दिशा मिल सकती है।

मुख्य शब्द (ज्ञमलूवतके): रू लघु वनोपज, आर्थिक सशक्तिकरण, जनजातीय समुदाय, नगरी विकासखण्ड, तेंदूपत्ता, शासकीय याजनाएँ।

परिचय:

भारत का जनजातीय समाज प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवन–शैली का प्रतिनिधित्व करता है। विशेषकर छत्तीसगढ़ राज्य के आदिवासी क्षेत्रों में वन केवल प्राकृतिक संपदा नहीं, बल्कि आजीविका, संस्कृति एवं सामाजिक जीवन का आधार हैं। लघु वनोपज (डपदवत थ्वतमेज च्तवकनबम) जैसे तेंदूपत्ता, महुआ, सालबीज, हर्रा, इमली, चिरौंजी आदि जनजातीय परिवारो की आय के प्रमुख स्राते हैं। इन वनोपजो का संग्रहण, संरक्षण एवं विपणन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

छत्तीसगढ़ शासन एवं भारत सरकार द्वारा वन धन विकास योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य योजना, तेंदूपत्ता बोनस योजना तथा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमो के माध्यम से जनजातीय समुदाय की आय में वृद्धि के प्रयास किए जा रह हैं। इसके बावजूद अनेक क्षेत्रो में विपणन व्यवस्था, प्रसंस्करण सुविधाओं, भंडारण, परिवहन तथा बाजार तक पहुँच जैसी समस्याएँ आज भी विद्यमान हैं।

धमतरी जिले का नगरी विकासखण्ड जनजातीय बहुल क्षेत्र है, जहा अधिकाश परिवार कृषि एवं लघ वनोपज संग्रह पर निर्भर हैं। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया ह कि लघु वनोपज वास्तव में आर्थिक सशक्तिकरण का कितना प्रभावी माध्यम सिद्ध हो रही है तथा शासकीय योजनाएँ किस सीमा तक लाभान्वित कर रही हैं।

साहित्य समीक्षा (त्मअपमू वि स्पजमतंजनतम)

कोठारी (2004) ने अनुसंधान पद्धति पर अपने अध्ययन में बताया कि सामाजिक एवं आर्थिक अनुसंधान में प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण वास्तविक स्थिति का समझने का सबसे प्रभावी माध्यम है। ज्त्थ्म्क (2023) के अनुसार लघु वनोपज जनजातीय परिवारों की वार्षिक आय का महत्वपूर्ण स्रोत है तथा मूल्य संवर्धन के माध्यम से उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार (2022) की रिपार्टे में उल्लेख है कि वन धन विकास केन्द्रो की स्थापना से जनजातीय परिवारों को विपणन एव प्रसंस्करण की सुविधाएँ उपलब्ध हुई है, जिससे आय मे सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला ह।

छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ (2023) के अनुसार राज्य मे तेंदूपत्ता संग्रहण एव बोनस वितरण से लाखां संग्रहकों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ है। इसके बावजूद प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन की संभावनाओं का पूण उपयोग अभी शेष है। थ्वतमेज नतअमल वि प्दकपं (2023) के अनसार वन संसाधनों का सतत उपयोग स्थानीय समुदायों की आजीविका तथा पर्यावरण संरक्षण दानो के लिए आवश्यक है। उपराक्त अध्ययनो से स्पष्ट होता है कि लघु वनोपज आर्थिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण साधन है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. नगरी विकासखंड के आदिवासी परिवारों की आजीविका में लघु वनोपज की भूमिका का अध्ययन करना।
2. लघु वनोपज से प्राप्त आय एवं आदिवासी परिवारों की आर्थिक स्थिति का विश्लेशण करना।
3. लघु वनोपज के संग्रहण, प्रसंस्करण एवं विपणन से संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना।
4. लघु वनोपज के उचित मूल्य निर्धारण एवं विपणन व्यवस्था का आदिवासी परिवारों की आय पर पड़ने वाले प्रभाव का विष्लेशण करना।
5. लघु वनोपज के माध्यम से आदिवासी परिवारों को प्राप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।
6. आदिवासी परिवारों के आर्थिक सषक्तिकरण में षासकीय योजनाओं की भूमिका का मूल्याकंन करना तथा उनकी आय बढ़ाने हेतु आवष्यक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति (त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल)

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (क्मेबतपचजपअम) एव विश्लेषणात्मक (।दंसलजपबंस) अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य नगरी विकासखण्ड के जनजातीय समुदाय के आर्थिक सशक्तिकरण मे लघु वनोपज की भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया।

प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली (फनमेजपवददंपतम) के माध्यम से जनजातीय परिवारो से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित कर संकलित किए गए। इस अध्ययन में कुल 10 जनजातीय परिवारो का सुविधाजनक निदर्शन (ब्वदअमदपमदबम उचसपदह) के आधार पर चयन किया गया। द्वितीयक आँकड़े विभिन्न पुस्तकों, शोध–पत्रो, सरकारी प्रतिवेदनो, जनजातीय कार्य मंत्रालय, ज्त्थ्म्क तथा छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज संघ के प्रकाशनो से प्राप्त किए गए।

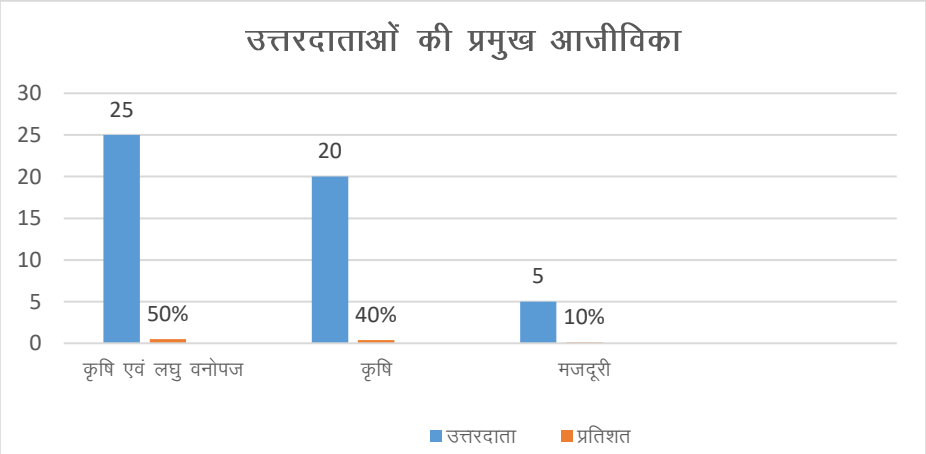
संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि (च्मतबमदजंहम डमजीवक), सारणीयन (ज्ंइनसंजपवद) तथा वर्णनात्मक व्याख्या (क्मेबतपचजपअम प्दजमतचतमजंजपवद) के माध्यम से किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी– 1 : उत्तरदाताओं की प्रमुख आजीविका

आजीविका	उत्तरदाता	प्रतिशत
कृषि एवं लघु वनोपज	25	50 :
कृषि	20	40 :
मजदूरी	5	10 :

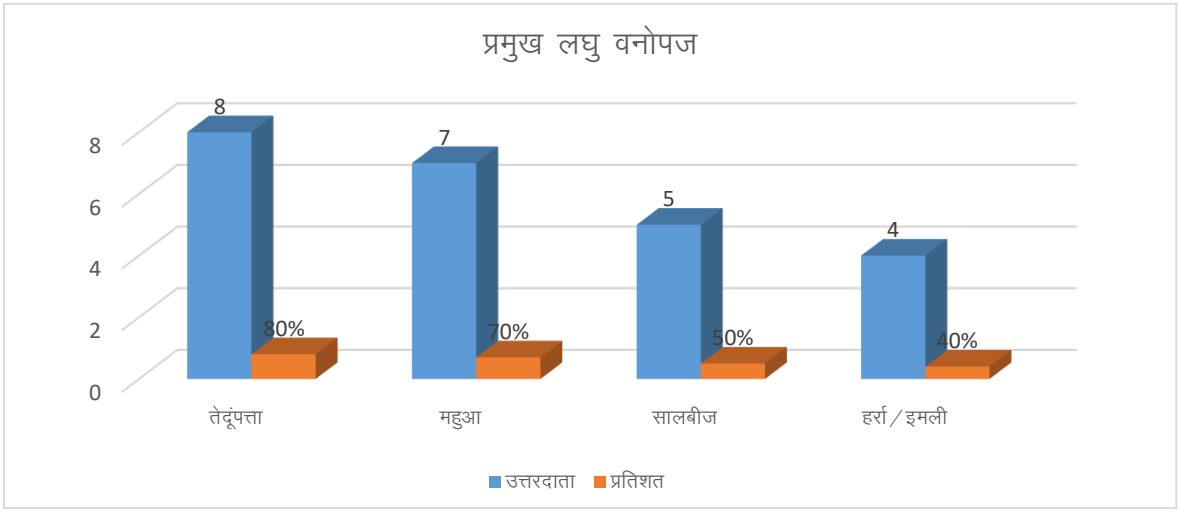
विश्लेषणः अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश (70 :) उत्तरदाता कृषि के साथ–साथ लघु वनोपज संग्रहण पर निर्भर हैं। इससे स्पष्ट होता है कि लघु वनोपज उनके लिए अतिरिक्त आय का प्रमुख सोत है।



सारणी– 2 : प्रमुख लघु वनोपज

वनोपज	उत्तरदाता	प्रतिशत
तेंदूपत्ता	8	80 :
महुआ	7	70 :
सालबीज	5	50 :
हर्रा / इमली	4	40 :

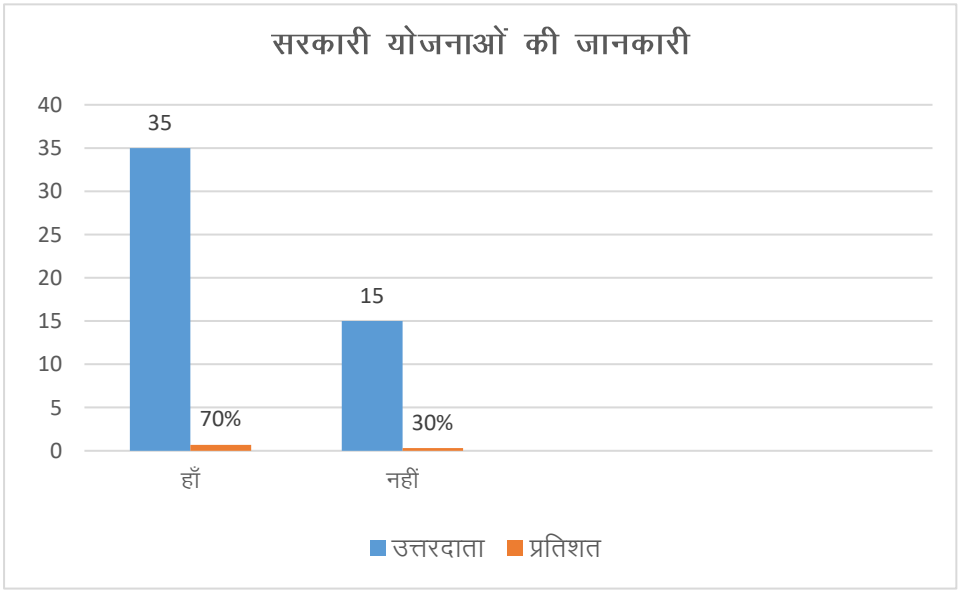
विश्लेषण: सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ कि तेंदूपत्ता एवं महुआ सबसे अधिक संग्रहित किए जाने वाले लघु वनोपज हैं। इनसे परिवारों को मौसमी आय प्राप्त होती है।



सारणी–3 : सरकारी योजनाओं की जानकारी

उत्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत
हाँ	35	70 :
नहीं	15	30 :

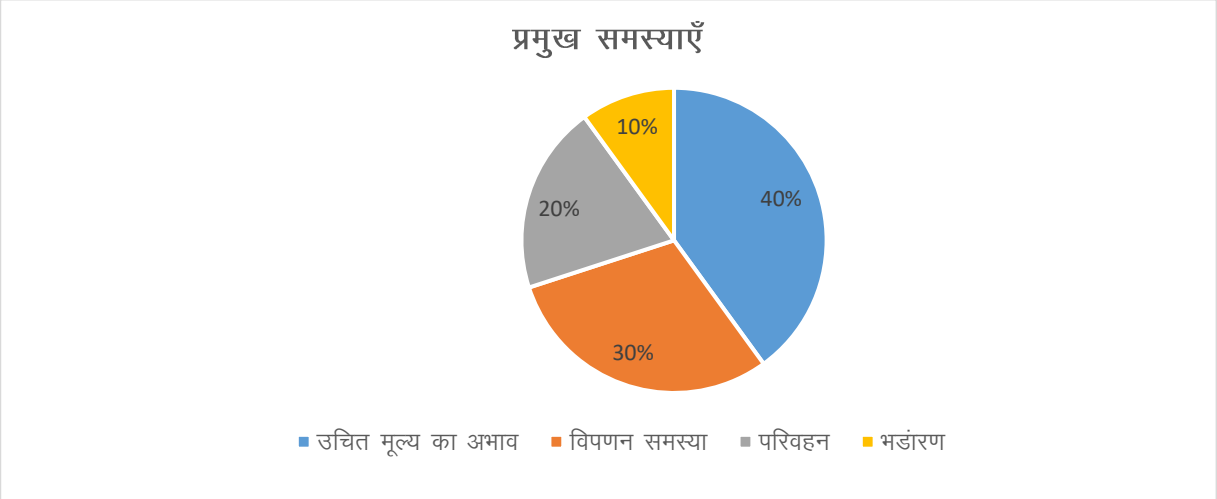
विश्लेषण: अध्ययन से ज्ञात हुआ कि 40 प्रतिशत उत्तरदाता अभी भी सरकारी योजनाओं की पर्याप्त जानकारी से वंचित हैं। इससे योजनाओं के व्यापक प्रचार–प्रसार की आवश्यकता स्पष्ट होती हैं।



सारणी–4 : प्रमुख समस्याएँ

समस्या	प्रतिशत
उचित मूल्य का अभाव	40 :
विपणन समस्या	30 :
परिवहन	20 :
भडांरण	10 :

विश्लेषणः अधिकांश उत्तरदाताओं ने उचित मूल्य एवं विपणन व्यवस्था का सबसे बड़ी समस्या बताया। इससे यह स्पष्ट होता है कि उत्पादन के साथ–साथ विपणन प्रणाली को भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता ह।

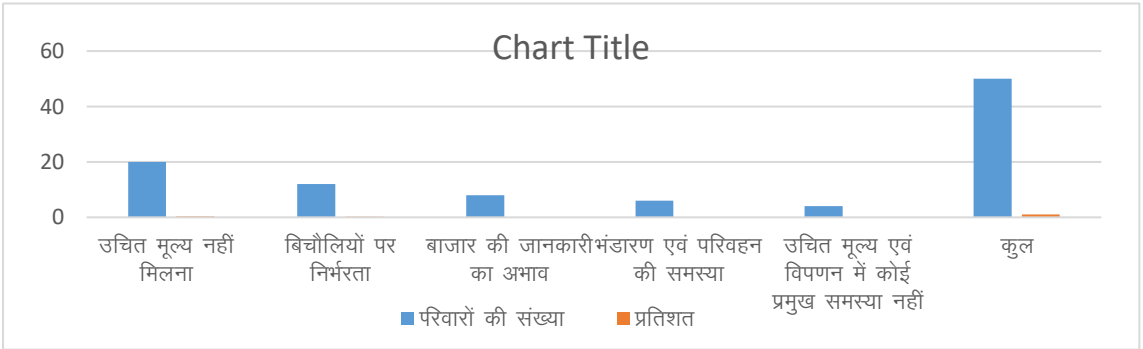


सारणी 5 : लघु वनोपज के मूल्य एंव विपणन व्यवस्था से संबंधित परिवारों की स्थिति

क्र.	मूल्य एवं विपणन संबंधी समस्या	परिवारों की संख्या	प्रतिशत
1.	उचित मूल्य नहीं मिलना	20	40 :
2.	बिचौलियों पर निर्भरता	12	24 :
3.	बाजार की जानकारी का अभाव	8	16 :
4.	भंडारण एवं परिवहन की समस्या	6	12 :
5.	उचित मूल्य एवं विपणन में कोई प्रमुख समस्या नहीं	4	8 :
	कुल	50	100 :

तालिका का विष्लेशण

तालिका से पता चलता है कि 40ः परिवारों को लघु वनोपज का उचित मूल्य प्राप्त नहीं होता, जबकि 24ः परिवार बिचौलियों पर निर्भर हैं। इसके अतिरिक्त, 16 परिवारों को बाजार की जानकारी का अभाव है तथा 12 परिवार भंडारण एवं परिवहन संबंधी समस्याओं का सामना करते हैं। इससे स्पश्ट होता है कि उचित मूल्य, बाजार तक सीधी पहँच तथा भंडारण सुविधाओं में सुधार आवष्यक है।



अध्ययन के प्रमुख परिणाम (डंरवत थ्पदकपदहे)

- अधिकाश जनजातीय परिवार कृषि एवं लघु वनोपज पर निर्भर हैं।
- तेंदूपत्ता एवं महुआ आय के प्रमुख स्रोत हैं।
- सरकारी योजनाओं की जानकारी सभी परिवारों तक समान रूप से नहीं पहुँच रही है।
- उचित बाजार मूल्य एवं विपणन सुविधाओ का अभाव प्रमुख समस्या है।
- प्रशिक्षण एवं मूल्य संवर्धन की सुविधाओ के विस्तार की आवश्यकता है।
- लघु वनोपज जनजातीय परिवारो के आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम सिद्ध हा सकती है।

सुधार हेतु सुझाव (च्वसपबल त्मबवउउमदकंजपवदे)

1. उचित मुल्य निर्धारणः लघु वनोपज का उचित मूल्य सुनिष्चत करने के लिए न्यूनतम समर्थन मुल्य एवं पारदर्षी खरीद व्यवस्था को प्रभावी बनाया जाए।
2. बिचौलियों पर निर्भरता कम करनाः आदिवासी परिवारों को सहकारी समितियों एवं वन धन विकास केंद्रों के माध्यम से सीधे बाजार से जोड़ा जाए, ताकि उन्हें अपने उत्पादों का बेहतर मूल्य मिल सके।
3. बाजार संबंधी जानकारीः परिवारों को विभिन्न वनोपज के वर्तमान बाजार भाव, मांग, बिक्री के अवसरों एवं षासकीय योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाए।
4. भंडारण एवं परिवहन सुविधाः वनोपज को सुरक्षित रखने के लिए स्थानीय स्तर पर भंडारण केंद्र स्थापित किए जाएँ तथा बाजार तक पहुँचाने के लिए उचित परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
5. प्रसंस्करण एवं पैकेजिंगः महुआ, इमली, चिरौंजी एवं अन्य लघु वनोपज के प्रसंस्करण, गुणवत्ता सुधार एवं आकर्शक पैकेजिंग को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे उत्पादों का मूल्य बढ़ सके।
6. प्रषिक्षण एवं कौषल विकासः आदिवासी परिवारों को वनोपज के संग्रहण, संरक्षण, प्रसंस्करण और विपणन का प्रषिक्षण दिया जाए।
7. महिला स्व–सहायता समूहों को प्रोत्साहनः महिलाओं को लघु वनोपज आधारित स्वरोजगार एवं लघु उद्योगों से जोड़ने के लिए वित्तीय सहायता तथा तकनीकी प्रषिक्षण उपलब्ध कराया जाए।
8. डिजिटल विपणनः आदिवासी परिवारों को ऑनलाइन बाजार एंव डिजिटल माध्यमों से उत्पाद बेचने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
9. षासकीय योजनाओं का प्रभावी कियान्वयनः पात्र परिवारों तक वन धन विकास केन्द्रों, वनोपज संबंधी योजनाओं तथा अन्य रोजगार एंव वित्तीय सहायता कार्यक्रमों का लाभ पहुँचाया जाए।
10. सहकारी विपणन व्यवस्था का विकासः आदिवासी परिवारों को संगठित करके सामूहिक खरीद एंव बिक्री की व्यवस्था विकसित की जाए, जिससे उनकी सौदेबाजी क्षमता और आय में वृध्दि हो सके।

अध्ययन की सीमाएँ (स्पउपजंजपवदे वजीमंजनकल)

- अध्ययन नगरी विकासखण्ड के सीमित क्षेत्र तक ही सीमित है।
- प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली आधारित हैं।
- अध्ययन में सीमित उत्तरदाताओ के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हं ।
- भविष्य में अधिक बड़ नमन (उचसमंप्रम) पर अध्ययन कर अधिक व्यापक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष (ब्वदबसनेपवद)

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नगरी विकासखण्ड के जनजातीय समुदाय की आजीविका
में लघु वनोपज का महत्वपूर्ण योगदान है। तेंदूपत्ता, महुआ, सालबीज एवं अन्य वनोपजों से प्राप्त आय परिवारों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक है। तथापि विपणन व्यवस्था, मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण सुविधाओं एवं योजनाओं की सीमित पहुँच के कारण अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं हो पा रहा है। यदि इन चुनौतियों का समाधान किया जाए, तो लघु वनोपज जनजातीय समुदाय के सतत आर्थिक सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम बन सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (।च। शैली)

- ज्ञवजींतपए ब्व त्व ;2004द्ध त्मेमंतबी डमजीवकवसवहलरू डमजीवके ंदक ज्मबीदपुनमे ;2दक मकण्द्ध छमू ।हम प्दजमतदंजपवदंस च्नइसपेीमतेए छमू क्मसीपए चचण 1दृ58ए 95दृ122ण
- ळनचजंएेण च्व ;2020द्ध त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल ंदकेजंजपेजपबंस ज्मबीदपुनमेण्ेनसजंद बेंदक –ेवदेए छमू क्मसीपए चचण 45दृ 98ण
- ळवअमतदउमदज वप्दकपंण ;2022द्ध ।ददनंस त्मचवतज 2021दृ22ण डपदपेजतल वज्तपइंस ।पितेए छमू क्मसीपए चचण 78दृ96ण
- ज्त्थ्म्क्ण ;2023द्ध ।ददनंस त्मचवतज 2022दृ23ण ज्तपइंस ब्ववचमतंजपअम डंतामजपदह क्मअमसवचउमदज थ्मकमतंजपवद वप्दकपं स्जकण्ए छमू क्मसीपए चचण 32दृ56ण
- बींजजपेहंतीेजंजम डपदवत थ्वतमेज च्तवकनबम ;ज्तंकपदह – क्मअमसवचउमदजद्ध ब्ववचमतंजपअम थ्मकमतंजपवद स्जकण

- ;2023द्ध ण् ।ददनंस त्मचवतजए त्ंपचनतए चचण् 18दृ40ण्
- थ्वतमेज ैनतअमल व िप्दकपंण् ;2023द्ध ण् प्दकपं ैजंजम व िथ्वतमेज त्मचवतज 2023ण् क्मीतंकनदए चचण् 210दृ235ण् डपदपेजतल व िम्दअपतवदउमदजए थ्वतमेज ंदक ब्सपउंजम बैंदहमण् ;2023द्ध ण् थ्वतमेज ब्वदेमतअंजपवद ंदक ैनेजंपदंइसम स्पअमसपीववकेण् ळवअमतदउमदज व िप्दकपंए छमू क्मसीपए चचण् 60दृ82ण्
- पदहीए ज्ञण् ;2018द्ध ण् त्नतंस क्मअमसवचउमदजरू च्तपदबपचसमेए च्वसपबपमे ंदक डंदंहमउमदजण् ैहम च्नइसपबंजपवदेए छमू क्मसीपए चचण् 130दृ165ण्
- ोंतउंए त्ण् ब्ण् ;2021द्ध ण् ज्तपइंस म्बवदवउल ंदक ैनेजंपदंइसम क्मअमसवचउमदज पद प्दकपंण् ।जसंदजपब च्नइसपोमतेए छमू क्मसीपए चचण् 84दृ116ण्
- टमतउंए ैण् ज्ञण् ;2020द्ध ण् ष्त्वसम व िडपदवत थ्वतमेज च्तवकनबम पद ज्तपइंस स्पअमसपीववकण्ष् प्दकपंद श्रवनतदंस व िल्नतंस क्मअमसवचउमदजए 39;2द्धए 145दृ158ण्
- त्ंवए च्ण् ;2021द्ध ण् ष्थ्वतमेज.ठेंमक स्पअमसपीववक ंदक ज्तपइंस म्उचवूमतउमदजण्ष् श्रवनतदंस व िवबपंस ैबपमदबमेए 48;3द्धए 210दृ221ण्
- ब्मदेने व िप्दकपंण् ;2011द्ध ण् च्तपउंतल ब्मदेने ।इेजतंबजए र्पिबम व िजीम त्महपेजतंत ळमदमतंस – ब्मदेने ब्वउउपेपवदमतए प्दकपंण्